परिचय

वास्तविक यीशु कौन है?

अमेरिका में 1960 और 70 के दशकों में ''टू टैल द ट्रुथ'' नामक एक प्रसिद्ध टेलीविज़न गेम शो होता था। प्रसिद्ध लोगों के पैनल के सामने तीन प्रतियोगी आते थे और वे एक ही व्यक्ति होने का दावा करते थे, आमतौर पर ऐसा व्यक्ति जिसने कोई असामान्य बात की हो। प्रश्न पूछने के कई मिनटों के बाद पैनल उस व्यक्ति के लिए वोट डालता, जिसे वे मानते थे कि वह सच बोल रहा है। इसका चरम क्षण वह समय होता था, जब उस कार्यक्रम का आयोजक गैरी मूल आता और कहता, ''वास्तविक _____ _____ कौन है?'' तब सच बोलने वाले का पता चल जाता और झूठ बोलने वाले पकड़े जाते।

जब आप विभिन्न विवरण और व्याख्याएं सुनते हैं कि यीशु कौन है तो आपको लग सकता है कि आप यह कहना चाह रहे हैं कि ''वास्तविक यीशु कौन है कृपया खड़ा हो जाए?'' यीशु तर्कपूर्ण ढंग से मानवीय इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति है और आज भी वह विद्वानों, धार्मिक श्रद्धालुओं और मनोरंजन जगत के लोगों के हर प्रकार का आकर्षण है; परन्तु इन में से सभी ये समझने में सहायतक नहीं होते हैं कि वास्तविक यीशु कौन है।

एक समूह (विभिन्न लोगों और विद्वानों का जिसे ''यीशु सेमिनार'' कहा जाता है) ने उसे घुमक्कड़ यहूदी कहानी बताने वाले के रूप में दिखाया है, जिसने किसी को ठोकर दिलाने या परेशान करने वाली कभी कोई बात नहीं की।[1] अन्य उसे एक करिश्माई चंगाई देने वाले, जादूगर, समाज सुधारक या राजनीतिक क्रांतिकारी के रूप में दिखाते हैं। मेल गिबसन की 2004 की फिल्म द पैशन ऑफ़ द क्राइस्ट में यीशु को दुख सहने वाले शहीद के रूप में दिखाया गया परन्तु उसकी पहचान का स्पष्ट बोध नहीं दिया गया। हाल ही में डैन ब्राउन की द विनसी कोर्ड और माइकल बेगेंट की द जीज़स पेपर्ज़ ने इस विचार को प्रसिद्ध किया है कि यीशु वह कदाचित नहीं था, जो नये नियम तथा मसीही लोगों द्वारा उसे दिखाया गया है। ये कृतियां उसे एक गैर ईश्वरीय मनुष्य के रूप में दिखाती हैं जो अपनी वास्तविक पहचान को छिपाने के लिए बनाए जटिल आड़ का विषय बन गया।

यहां तक कि जो यीशु को पुन: परिभाषित करने की कोशिश नहीं भी करते, उन्होंने भी उसकी पहचान पर उलझन में योगदान दिया है। कई श्रद्धालु धार्मिक लोग यीशु पर तो बातें करते हैं पर उसे अपनी भावनाओं में ही वर्णित करना चाहते हैं जैसे ''यीशु वह है जो मेरे मन को गर्म रखता है''; ''यीशु मुझे शांति देता है।'' वह यह समझने के लिए रुकते नहीं हैं कि वह मानवीय इतिहास के दृश्य पर एक वास्तविक व्यक्ति था न कि अहसास करने के लिए केवल एक नाम। वे आम तौर पर यह जानकर कि यीशु के बारे में कई तथ्य पता चल सकते हैं न केवल चकित होते बल्कि परेशान होते हैं।

ऐसी उलझन नई नहीं है। धर्मशास्त्री हैल्मट हिलिक ने लिखा है, ''बार-बार यीशु के व्यक्ति होने को हर युग के स्वाद से मेल खाने के लिए भयानक रूप से काट डाला गया है।''[2] यह

इतिहासकार जरोसल्व पैलिकन का अवलोकन है कि ''किसी विशेष युग द्वारा यीशु को दर्शाने का ढंग आम तौर पर उस युग की समझ की कुंजी होता है।''[3] अन्य शब्दों में, यीशु कौन है के विचारों की विभिन्नता से यीशु के बजाय हमारे अपने बारे में अधिक पता चल सकता है। हम उसे जैसा चाहते हैं वैसा देखने के शिकार हो सकते हैं, उठने वाले तथ्यों के बावजूद। परिणाम यह होता है कि जो लोग आज ''यीशु'' की बात करते हैं उनका अर्थ मूल रूप में उसके नाम का इस्तेमाल करने पर एक-दूसरे से भिन्न होता है।

हमारा काम यह पता लगाना है कि हम यीशु के बारे में सचमुच में क्या जान सकते हैं। हमारी चिंता यीशु के बारे में आधुनिक संरचनाएं नहीं या हमारी भावनाओं वाला यीशु नहीं, बल्कि वह यीशु है जो सचमुच में पहली सदी के रोमी साम्राज्य के समय के दौरान रहा और मरा।

टिप्पणियां

[1]वे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यीशु ने वास्तव में उसका केवल 18 प्रतिशत के लगभग कहा जो सुसमाचार की पुस्तकों में बताया गया है कि उसने कहा। वे इस निष्कर्ष की हर बात पर यह कहने के द्वारा वोटिंग करके पहुंचे हैं और यह निष्कर्ष किसी भी प्रकार से सामूहिक नहीं है। [2]हेल्मट, थिलिक, *हाऊ मॉडर्न सुड थियोलॉजी बी?* अनु. एच. जॉर्ज़ एंडर्सन (फिलाडेल्फिया: फोर्टरेस प्रैस, 1969), 18. [3]जरोसलव पेलिकन, *जीज़स थ्रू द सेंचुरीज़: हिज़ प्लेस इन दि हिस्ट्री ऑफ़ कल्चर* (न्यू हेवन, कनेक्टिकट: येल यूनिवर्सिटी प्रैस, 1985), 3.